46.	Nayee Duniya	26 October 2009

फिल्में बताएंगी प्रकृति का हाल

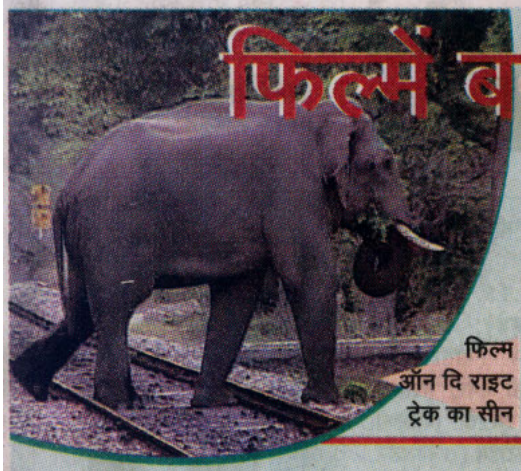

फिल्म ऑन दि राइट ट्रेक का सीन

- पर्यावरण और वन्यजीव फिल्म महोत्सव मंगलवार से।
- देश-विदेश की 106 फिल्में दिखाई जाएंगी, कार्यशालाएं भी होंगी।
- सीएमएस वातावरण महोत्सव 31 अक्टूबर तक चलेगा।

अलका तोमर
फेस्टिवल डायरेक्टर

दुष्यंत शर्मा

मंगलवार शाम से इंडिया हैबिटेट सेंटर पूरी तरह प्रकृति और पर्यावरण के रंग में रंग जाएगा। यहां पर्यावरण और वन्यजीवों पर आधारित फिल्मों का महोत्सव सीएमएस वातावरण शुरू होने जा रहा है। इसमें देश-विदेश की सौ से अधिक छोटी-बड़ी फिल्मों के प्रदर्शन के अलावा ऐसे बहुत से आयोजन किए जाएंगे जो जलवायु में आ रहे बदलावों के प्रति आम लोगों में जागरुकता पैदा करने वाले और सचेत लोगों की समझ बढ़ाने का काम करेंगे। महोत्सव का उद्घाटन 27 अक्टूबर की शाम को स्टीन सभागार में गैर पारंपरिक ऊर्जा मंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला करेंगे। पांच दिन तक चलने वाले इस महोत्सव का यह पांचवां आयोजन वर्ष भी है।

महोत्सव के दौरान जलवायु परिवर्तन पर सेमिनार होगा जिसका उद्देश्य लोगों को यह बताना है कि किस तरह शहरों में हम सही तकनीकों का इस्तेमाल करके पर्यावरण के खतरों का सामना कर सकते हैं या उन्हें कम कर सकते हैं। दूसरे, इसमें दिल्ली के बस ट्रांजिट सिस्टम पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। 29 अक्टूबर को होने वाली यह कार्याशाला खास तौर से मीडिया के लिए रखी गई है। समारोह में 15 देशों और भारत के 17 राज्यों की 106 फिल्में दिखाई जाएंगी। इस बार की विषय-वस्तु है- जलवायु परिवर्तन और स्थायी तकनीकें। मुख्य विषय है- प्राकृतिक धरोहर संरक्षण। 30 तारीख को पुरस्कारों की घोषणा की जाएगी। इनमें कुछ पुरस्कार भारतीय वर्गों के लिए और कुछ अंतरराष्ट्रीय श्रेणी के अंतर्गत दिए जाएंगे।

सीएमएस (सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज़) द्वारा वातावरण फिल्म महोत्सव की शुरुआत 2002 में की गई थी। हालांकि इसे नाम फिल्म उत्सव का दिया गया है लेकिन इन पांच दिनों के दौरान कार्यशालाएं होंगी, सेमिनार, कांग्रेस, ईको खेल, ईको ट्रिप्स और प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जाएगा। पिछले अनुभवों से उत्साहित सीएमएस वाताावरण की फेस्टिवल डायरेक्टर अलका तोमर बताती हैं, ' दरअसल, यह प्रकृति-पर्यावरण की समझ विकसित करने, आम आदमी से लेकर इन मुद्दों के प्रति चिंतित रहने वाले लोगों के लिए भी कुछ न कुछ नया देने की एक कोशिश है। महोत्सव उन लोगों के लिए लाभकारी होगा जो इन मुद्दों पर काम कर रहे हैं। वे यहां बहुत सी नई चीजें पाएंगे। दूसरे, यह आयोजन उन लोगों के लिए एक अच्छा अवसर है जिन्हें मालूम ही नहीं है कि चीजें क्या हैं, किस दिशा में जा रही हैं। तभी तो हम इसे एक अभियान के तौर पर आगे बढ़ा रहे हैं। इस अभियान में हमारे बहुत से व्यक्तिगत और संस्थागत सहयोगी हैं जिन्हें साथ लेकर ही आगे बढ़ना संभव हो पा रहा है।' प्रकृति-पर्यावरण के प्रति समझ बढ़ाने में फिल्में अहम भूमिका निभाती आई हैं। इसीलिए फिल्मों को जानकारी देने का एक कारगर हथियार माना गया है। इस बारे में अलका कहती हैं, 'फिल्मों की सबसे बड़ी खासियत यही है कि बिना कहीं जाए, बिना किताब पढ़े ये किसी विषय विशेष पर पूरी जानकारी दे देती हैं। मिसाल के तौर पर पूर्वोत्तर में नदी-पानी या दूसरी चीजों की क्या स्थिति है यह बड़ी जीवंतता के साथ आधे-पौने घंटे की फिल्म देखकर आसानी से देखा-समझा जा सकता है। वह भी सप्रमाण।'

महोत्सव के दैरान दिखाई जाने वाली फिल्म रिवाइविंग फेथ का दृश्य